सारांशः

प्रस्तुत शोध प्रबंध **''जनजातियों का आर्थिक विकास और वनोपज'' (गुमला जिला के विशेष संदर्भ)** जनजातीय अर्थव्यवस्था वन एवं पर्यावरण से गहराई से जुड़ी है। जनजातियों की समस्त सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में वन एवं वनोपजों की महत्वपूर्ण भूमिका है। वन उनके लिए प्राकृतिक आवासगृह के समान हैं, जहाँ उन्हें खाद्य पदार्थ, रोजगार, आर्थिक समृद्धि एवं उनकी संस्कृति के विकास को बल मिलता है। वस्तुत: वन आदिवासियों के पोषक रहे हैं, जिनसे उन्हें प्रत्यक्ष लाभ जैसे- ईधन, लकड़ी, चारा, फल-फूल, कंदमूल, छाल रेशे एवं अनेक वाणिज्यिक महत्व के वनोपजें प्राप्त होती हैं।

जनजातियों की सम्पूर्ण जीवन पद्धति में वनोपजों की महत्वपूर्ण भूमिका है, यह ना केवल जीवन निर्वहन हेतु वरन् अत्यधिक रोजगार, आय एवं विनिमय की प्राप्ति का भी कार्य करती है। वनोपज जहाँ 50 प्रतिशत से भी अधिक आय प्रदान करती हैं वहीं रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत भी है। फलतः जनजातियों द्वारा कृषि उत्पाद का न्यूनतम मात्रा में विपणन किया जाता है। गरीब ग्रामीण जनसंख्या अतिरिक्त आय एवं रोजगार हेतु वनोपजों पर अत्यधिक निर्भर है। कुछ जनजातीय समुदायों में वनोपज से प्राप्त आय का प्रतिशत कृषि आय से भी अधिक है।

वनों की सुरक्षा के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर वन अधिकार नियमों में सुधार होता रहा है और वनों की सुरक्षा के लिए ग्रामिण स्तर पर ग्राम सभा के द्वारा ग्रामिणों को वनोपज और वन से जुड़े सभी लाभों की जानकारी जनजातियों के समुख प्रस्तुत करता है, ताकि आम ग्रामीणों को भी पता चले सके और पर्यावरण के साथ मिलकर जनजातियाँ भी अपनी विकास सुनिश्चित कर सकें।

वनोपज ग्रामीणों की जीविका एवं आय का प्रमुख स्त्रोत है। महिलाएँ वनोपज की प्रमुख संग्राहक हैं, जो वनोपज के संग्रहण से लेकर विपणन तक समस्त क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जनजातीय एवं अन्य ग्रामीण समुदाय अपने भोजन की पूर्ति के रूप में कंदमूल, फूल एवं फलों पर वर्ष भर निर्भर रहते हैं।

वनोपज का जनजातियों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य जीवन पर बहुत ही अच्छा प्रभाव रहा हैं, आज वनोपज के माध्यम से उनकी जीवन निर्वाहन की जो पूरानी व्यवस्था थी। उसे पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया गया है। आज उनका शैक्षिक, आर्थिक विकास हो गया है। जिसके फलस्वरूप जनजातिय समाज ने भी अपनी सामाजिक सांस्कृति को बदल दिया है। आज वे आधुनिक या मॉडल समाज की संस्कृति के साथ अपने को व्यवस्थित करके जी रहे हैं।